International Journal of Arts, Humanities and Social Studies

ISSN Print: 2664-8652
ISSN Online: 2664-8660
Impact Factor: RJIF 8
IJAHSS 2024; 6(1): 101-103
www.socialstudiesjournal.com
Received: 06-03-2024
Accepted: 08-04-2024

डॉ. रवीन्द्र कुमार सिंह
सहायक आचार्य, विभागाध्यक्ष (हिन्दी विभाग), राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. रवीन्द्र कुमार सिंह
सहायक आचार्य, विभागाध्यक्ष (हिन्दी विभाग), राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

स्त्री विमर्श के संदर्भ और नासिरा शर्मा के उपन्यास

डॉ. रवीन्द्र कुमार सिंह

DOI: https://doi.org/10.33545/26648652.2024.v6.i1b.102

सारांश
एक स्त्री को क्या दुःख है क्या समस्या है और क्या परिस्थिति है एक स्थिति विशेष में इसका सही आकलन करने के लिए साहित्य जगत में स्त्री जितना सक्षम हो सकती है उतना ही पुरुष नहीं। स्त्री अपनी समस्याओं से प्रत्यक्षतः जुड़ी है, उसकी प्रखर अनुभूति उनके ही पास है, वह अपनी पीड़ा का दंश स्वतः भोगती हैं। इसलिए उनकी अभिव्यक्ति में ज्यादा यथार्थ और गांभीर्य समाहित होना स्वाभाविक है। अतएव स्त्री लेखिकाएँ चाहे वो मन्नू भण्डारी, प्रभा खेतान, मृणाल पाण्डे, मृदुला गर्ग हों या चित्रा मुद्गल, गीतांजली, मैत्रेयी पुष्पा अथवा नासिरा शर्मा हों, पुरुष लेखकों के समानांतर न सिर्फ अपनी अभिव्यक्ति दे रही हैं, अपितु साहित्यिक जगत से लेकर समीक्षकों, आलोचकों तक को यह स्वीकार करने के लिए विवश कर रही हैं कि ''महिलाओं का लेखन हिंदी का सबसे सशक्त लेखन है, इसके पीछे पुरुष कथाकारों की दुनिया लगभग पीछे छूट गयी है'' (राजेन्द्र यादव)।

कूटशब्द : स्त्री विमर्श, संदर्भ और नासिरा शर्मा, उपन्यास, स्थिति विशेष

प्रस्तावना
निरंतर विकासमान स्त्री–विमर्श की एक सशक्त कथा हस्ताक्षर नासिरा शर्मा न सिर्फ प्रभावित करती हैं पढ़ने के लिए, अपितु पढ़कर वर्तमान समय में स्त्री समाज पर उनकी संवेदना पर कुछ लिखने के लिए भी। नासिरा शर्मा नवें दशक के हिंदी कथा–साहित्य में उस समय अपनी रचनाशीलता से ध्यान आकर्षित करती हैं, जब साहित्य में स्त्री–विमर्श का प्रवेश होता है। यद्यपि स्त्री–विमर्श अपने प्रभाव और सृजन–संदर्भ में सीमित नहीं है, वरन् वह साहित्य और समाज की स्थापित सच्चाई है। नासिरा शर्मा स्त्री अस्मितावादी या स्त्रीत्ववादी लेखिका नहीं हैं, किन्तु उनके कथा–साहित्य का फलक बहुत विस्तृत है। उन्होंने अपनी रचनाशीलता से सभी को प्रभावित किया है। यह वह नाम है जिसकी चर्चा किए बिना हिंदी कथा–साहित्य का पूरा होना संभव नहीं है। इनके कथा–साहित्य में विषयगत विविधता है, उन्हें हिन्दू और मुसलमान दोनों समाजों का अंतरंग अनुभव है, जो इनके कथा–साहित्य में प्रतिबिम्बित हुआ है। इनके उपन्यासों और कहानियों की दुनिया बहुत विस्तृत है और इनके रचना–संदर्भ एवं विषय–वस्तु हिंदू समाज से मुस्लिम समाज तक तथा भारत से ईरान तक फैले हुए हैं। इनके कथा–साहित्य में यहूदी, हिंदू, मुसलमान आदि कई धर्मों और समाजों से संबद्ध जीवन का चित्रण है। उनके कथा–साहित्य में इस विषयगत विविधता एवं विस्तार का कारण उनका प्रत्यक्ष द्रष्टा होना है। लेकिन वस्तुगत विविधता के बावजूद उनके उपन्यासों और कहानियों में चिंता के केन्द्र में स्त्री ही है।

मुख्यतया नासिरा के लेखन में मुस्लिम समाज और उसमें स्त्री की दशा और नियति का व्यापक साक्षात्कार होता है। 'सात नदियाँ एक समंदर' (1984) से लेकर 'शाल्मली' (1987), 'ठीकरे की मंगनी' (1989) और जिंदा मुहावरे (1993) 'अक्षयवट', कुइयाँजान, 'जीरो रोड', 'अजनबी जजीरा' व साहित्य अकादमी से पुरस्कृत 'पारिजात', आदि जैसे उपन्यासों से नासिरा शर्मा ने स्त्री के अधिकारों के समक्ष आ रहे समाज, घर्म एवं संस्कारों की हदबंदियों को तोड़ने की घोषणा की है तथा उन्हें जीवन की स्वतंत्रता के आड़े नहीं आने दिया है। नासिरा शर्मा स्त्री विरोध वातावरण के बावजूद स्त्रियों के व्यक्तित्व को बचाने का संघर्ष करती हैं और टूट जाने पर भी समझौते नहीं करतीं।

स्त्री हिन्दू समाज में ही यातनाग्रस्त नहीं है, बल्कि मुस्लिम समाज में तो उसकी स्थिति और भी बदतर है। धर्म और संस्कारों की जकड़बंदी यहाँ अधिक है, लेकिन मुस्लिम समाज के जीवनगत संस्कार और व्यवस्था के बीच समाज की स्त्री विरोधी प्रवृत्तियों को समग्रता के साथ जिस तरह रूपायित किया है, वह हिंदू लेखिकाओं के निजी एकलापों से बहुत भिन्न है, पर उनकी मुश्किल यह है कि स्त्रियों को टूट की हद तक पहुँचाकर उन्हें अंधेरे में वे धकेल देती हैं।

यह अंधेरा ही अगर नई संभावनाओं का संकेत है तो चरित्रों के संघर्ष की क्या सार्थकता है, जिसकी नियति सिवाय टूटने के और कुछ भी नहीं।

उनके उपन्यास 'ठीकरे की मंगनी' में कम–से–कम इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं है। नासिरा शर्मा दांपत्य संबंधों में स्त्री की गौणता को स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं, उसकी स्वतंत्रता की पक्षधर बनकर आती हैं, लेकिन यह सवाल अपनी जगह है कि किसी समुचित व्यवस्थित मार्ग के बिना स्त्री–चरित्रों का विद्रोह अंततः उन्हें कहाँ ले जाता है। इसके बावजूद उनकी स्त्रियाँ परिवारहीनता के सीमांत को नहीं छूतीं, नासिरा शर्मा इस जोखिम को उठाने को तैयार नहीं हैं। संभवतः इसीलिए वे मर्यादित स्वतंत्रता का पक्षधर बनकर आती हैं। इनकी स्त्रियों के आवेग को भविष्य की संभावना और परिवर्तनशील स्थितियों में देखे जाने की जरूरत है, जिसमें स्त्री और पुरुष के सहकार से निर्मित होने बाला एक समाज का उदय होगा। नासिरा शर्मा की पुस्तक 'औरत के लिए औरत' को इसी संभावनाशील समाज की प्रस्तावना के रूप में देखा जा सकता है। वे स्वातंर्त्य के उस आत्यंतिक रूप के विरुद्ध हैं, जिसका सीमांत परिवार और समाज के विघटन को छूता है।

अपने उपन्यासों में नासिरा शर्मा का रोष सामने आता है पर, अनेक उपन्यासों में उन सवालों से प्रायः कतराने की कोशिश दिखाई देती है जो राजनीतिक और धार्मिक स्तर पर व्याप्त है तथा जिनके घेरे में पूरा मुस्लिम समाज आता है। नासिरा शर्मा के लेखन में मुस्लिम समाज और उसमें स्त्रियों की स्थिति का व्यापक साक्षात्कार है, उन्होंने अपने उपन्यासों में स्त्री के अधिकारों के समक्ष आ रहे समाज, धर्म, और संस्कारों की सीमाओं को तोड़ने की घोषणा की है और उसे जीवन की स्वतंत्रता के आड़े नहीं आने दिया है।

अपने पहले उपन्यास ''सात नदियाँ एक समंदर'' में नासिरा जी ईरानी जनता को रजा शाह पहलवी के विरुद्ध विद्रोह उनके शासन से मुक्ति अयतुल्ला खुमैनी के शासन की स्थापना फिर तानाशाही के अत्याचारों को सहते रहने की विवशता का चित्रण करती हैं। 'शाल्मली' में हिन्दू समाज में विषम दांपत्य जीवन में यातना भोगती स्त्री का वे चित्र उपस्थित करती हैं, इस उपन्यास में दांपत्य संबंधों में आए विघटन का एक कारण 'अर्थ' है। उपन्यास में नरेश एक सेक्शन ऑफिसर है और उसके विवाह हेतु लड़की चयन संबंधी विचार पूर्णतः अर्थ केन्द्रित है। उसका कथन है – ''लड़की अगर पढ़ी–लिखी है, तो धन का लालच छोड़ो, क्योंकि धन पैदा करने की मशीन तो वह ही है।[1] जिन दांपत्य संबंधों को परिवार की आधारशिला माना जाता है, यदि उन्हीं का आधार अर्थ बन जाएगा तो संबंधों में प्रेम का स्खलन स्वाभाविक है।¨ हर दिन एक अनजाना भय उसे दबोचने लगा था कि शाल्मली का बढ़ता कद उसके अपने व्यक्तित्व से ऊँचा उठता जा रहा है, उस पर छाता जा रहा है। यदि उसने शाल्मली की लगाम थामकर न रखी तो यह घोड़ी उसके अस्तबल में नहीं रह पाएगी।[2] अर्थात् शाल्मली के माध्यम से जो सुख–सुविधाएँ नरेश भोगता है, उससे वंचित हो जाएगा। इस प्रकार पहले जहाँ आपसी संबंधों का निर्धारण नैतिक मूल्यों और मान्यताओं पर टिका होता था उसका स्थान युगीन परिवेश में अर्थ ले चुका है।

'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास में वर्णित है कि स्त्री हिंदू समाज में ही यातनाग्रस्त नहीं है वरन् मुस्लिम समाज में उसकी स्थिति और भी बदतर है। इस उपन्यास में रफत एक ऐसा व्यक्ति है जो अपनी सुविधाओं के लिए अमेरिका जाता है और महरुख का मंगेतर होते हुए भी किसी अन्य स्त्री से केवल इसलिए संबंध बनाता है कि ''रफत का सारा खर्च वैलरी उठाती है।''[3] ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करने की इच्छा के कारण ही युगीन परिवेश में आत्मीय रिश्ते भी घर की निर्जीव वस्तु की भाँति एक उपकरण मात्र एवं औपचारिक संबोधन बनकर रह गए हैं। अतः स्पष्ट है कि विवेच्य उपन्यास में उपेक्षित और हाशिये पर रही महरूख द्वारा अपना अस्तित्व सिद्ध करने का संघर्ष दिखाई देता है।

जिंदा मुहावरे' उपन्यास में निजाम की स्थिति इसी प्रकार की है। वह 'दौलत समेटने में इतना' मसरूफ था कि वह अपने बचपन, अपने पुराने घर और उन यादों से पूरी तरह बाहर निकल आया या जो करॉंची आने के बाद से उसका बराबर पीछा करती।[4] वह अपनी पत्नी व बच्चों से दूर स्वयं में मग्न रहता है। निजाम की पत्नी सबीना उससे अपने दुःख–सुख साझा करने में स्वयं को असमर्थ समझती है। वह यह भी समझ चुकी थी कि ''अब निजाम अकेला उसका व उसके बच्चों का नहीं रह गया है, बल्कि बाजार, ग्राहक के बीच क्रय और विक्रय में फँसा बहुत बड़ा धन्नासेठ बन गया है।''[5] इसलिए अब उसे ''जज्बात, अहसास, तड़प बड़े लिजलिजे शब्द लगने लगे थे। अतः युगीन परिवेश में व्याप्त उपभोक्तावादी प्रवृत्ति ने मनुष्य को मनुष्यत्व से दूर कर दिया है।''

अपने उपन्यास 'अक्षयवट' के द्वारा नासिरा यह सिद्ध करती हैं कि आधुनिक युग में दाम्पत्य के साथ रक्त–संबंध भी अर्थ का प्रभाव झेल रहे हैं। माता–पिता, भाई–बहन के गूढ़ संबंधों में भी अर्थ के कारण कटुता उत्पन्न हुई है। पैतृक संपत्ति और धन–दौलत प्राप्त करने की लालसा में संतान अपने ही माता–पिता व भाई भाई की हत्या कर दे रहा है। यही कारण है कि प्यार और त्याग की भावनाएँ समाप्त होती जा रहीं हैं।

'कुइयाँजान' उपन्यास में बहन–बहन के बदलते संबंध को चित्रित किया गया है। उपन्यास में शकरआरा खुरशीदआरा की बड़ी बहन है, जिसका विवाह एक आई.ए.एस. अधिकारी से हुआ है। अत्यधिक घन–दौलत उसे घमण्डी बना देती है और वह अपनी बहन को महत्त्व नहीं देता है। लेकिन कुछ वर्षों के बाद जब उसे अपने पुत्र का अस्पताल खोलने का स्वप्न पूरा करने के लिए अधिक रुपयों की आवश्यकता पड़ी तो वह अपनी बहन से माँगती है, अर्थात् भौतिकवाद की बढ़ती प्रवृत्ति में संबंध दिखावा मात्र बनकर रह गए हैं।

'पारिजात' उपन्यास में भी संबंधों की अपेक्षा अर्थ को महत्त्व दिया गया है। फिरदौस जहाँ का पुत्र मोनिस अधिकाधिक धनार्जन हेतु भारत से इंग्लैण्ड पलायन करता है। उसकी माँ अकेली पड़ जाती है। माँ जब भी लौटने की बात करती तो मोनिस का उत्तर होता ''नो मोर डायलॉग। गौम। उस शहर की ठहरी जिंदगी में आकर मुझे मरना नहीं है। मैंने चेक डाल दिया है। गुडनाइट।''[6] यह सुनकर फिरदौस स्वयं के आँसू रोक नहीं पाती। वह कहती है, मुझे चेक नहीं तुम्हारी चाहत है।''[7] इस प्रकार संबंधों के बनने–बिगड़ने में अर्थ का बड़ा योगदान है। अर्थतंत्र के शिकंजे में व्यक्ति ऐसा जकड़ गया है कि हर समय और हर क्षेत्र में उसे आर्थिक प्रश्न तथा आर्थिक चिंताएं ही घेरे रहती हैं। अतः अब स्थिति यह है कि सुख–सुविधा के सारे सामान होते हुए भी हम अपनों से अपनापन खोते जा रहे हैं।

नासिरा जी के लेखन की सर्वोपरि विशेषता है सभ्यता, संस्कृति और मानवीय नियति के आत्मबल व अन्तःसंघर्ष का संवेदनापूरित चित्रण। उनके 'अजनबी जजीरा' उपन्यास में समीरा व उसकी पाँच बेटियों के माध्यम से इराक की बदहाली बयान की गई है। पतिविहीना समीरा अपनी युवा होती बेटियों के वर्तमान और भविष्य को लेकर चिंतित है। बारूद, विध्वंस और विनाश के बीच समीरा जिंदगी की रोशनी व खुशबू बचाने के लिए जूझ रही है। यह उपन्यास समीरा को चाहने वाले अंगरेज फौजी मार्क के पक्ष से क्षत–विक्षत इराक की मार्मिक व्याख्या प्रस्तुत करता है। समीरा और मार्क की प्रेम कहानी अद्भुत है, जिसमें जिम्मेदारियों के अहसास के रंग शिदेत से शामिल हैं। घृणा और प्रेम का सघन अंतर्द्वन्द्व इसे अपूर्व बनाता है। लेखिका यह भी रेखांकित करती है कि ऐसे परिदृश्य में स्त्री–विमर्श के सारे निहतार्थ सिरे से बदल जाते हैं। सभ्य कहे जाने वाले आधुनिक विश्व में विध्वंस का यह यथार्थ स्तब्ध कर देता है। विध्वंस की इस राजनीति में

क्या–क्या नष्ट होता है, इसे नासिरा शर्मा की बेजोड़ रचनात्मक सामर्थ्य ने 'अजनबी जजीरा' के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। नासिरा जी स्वयं को स्त्रीवादी लेखिका नहीं मानतीं। इन्होंने 'औरत के लिए औरत' नामक पुस्तक में कामकाजी स्त्रियों के संदर्भ में गंभीर चर्चा की है। वे हमेशा अपनी वर्गीय पक्षधरता बनाए रखती हैं।

निष्कर्ष

अन्त में निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि नासिरा जी का लेखन निम्नवर्गीय तथा कामकाजी औरतों पर ज्यादा केन्द्रित रहा है। लेकिन घर–गृहस्थी की आग में जलती स्त्रियों की त्रासदी को भी वे अनदेखा नहीं करतीं। लगभग हर वर्ग की नारी उनके कथा–साहित्य में अपने परिवेश और युगीन–सत्य के साथ उपस्थित है। सम्बन्धों के बीच अर्थ की केन्द्रीय भूमिका ने कड़वाहट, तनाव और असुरक्षा की स्थिति पैदा की है और पुरातन संस्कारों ने उनकी जिंदगी में विसंगतियाँ उत्पन्न की हैं। नासिरा के उपन्यासों में इन जीवन–सत्यों का कलात्मक उद्घाटन अत्यंत संजीदगी के साथ किया गया है।

संदर्भ

1. शर्मा नासिरा, शाल्मली, पृ 81
2. वही, पृ. 75
3. शर्मा नासिरा, ठीकरे की मँगनी, पृ. 60
4. शर्मा नासिरा, जिंदा मुहावरे, पृ. 52
5. वही, पृ. 51–52
6. शर्मा नासिरा, पारिजात, पृ. 136
7. वही, पृ. 136